"सिर उठा के जियो"

श्री रमेश कुमार ने अपनी जीवन बीमा पॉलिसी का प्रीमियम इसलिए नहीं पटाया कि उन्हे अच्छा म्युजिक सिस्टम खरीदना जरूरी था। ऐसे ही एक सज्जन अरूण प्रसाद को जब बोनस के पैसे मिले तो उन्होंने उस पैसों से बचत करने के बजाए सपरिवार मेसूरी भ्रमण करना उचित समझा, वहीं श्री राजेश ने बचत करने की अपेक्षा अपने परिवार की सुख सुविधा के लिए किश्तों पर कार खरीदना जरूरी समझा।

हमारी तनख्वाह में वृद्धि नहीं हुई कि हम वृद्धि के पैसों को भविष्य के लिए निवेश करने की बजाए, कहीं घूमना फिरना या कोई भौतिक वस्तु खरीदने की योजना बना डालते हैं। ऐसा करने से हम क्षणिक सुख विलास का अनुभव जरूर करतें हैं मगर क्या हम अपने माता पिता की मेडिकल जरूरतों का ध्यान रखतें हैं क्या हम अपने बच्चों का भविष्य सुरक्षित कर पाते हैं ?

कैरियर विचार

होता यह है कि हम पहले पैसे कमाने के लिए सारे प्रयोजन करते हैं। पैसों को कमाने के पहले ही उन्हे खर्च करने की योजना हमारे पास पहले से ही बनी रहती है, मसलत कपड़े - लत्ते,गाड़ी - बंगला ,घ ुमना - फिरना आदि। तत्पश्चात अगर कुछ पैसे बच गए तो उनका निवेश बचत के लिए करते है।

होना तो यह चाहिए कि हमें पहले कमाना चाहिए, फिर बचत की योजना बना कर सही निवेश करना चाहिए। इसके बाद जो पैसे बचे, उनका हमें सही ढंग से प्रयोग करना चाहिए। क्यों ना हम "कमाओ, खर्च करो और बचाओ" के समीकरण को बदलकर "कमाओ - बचाओ और खर्च करो " का सूत्र बना दें।

एक कहावत है जो पैसा आपने बचा लिया, वहीं पैसा आपने कमा लिया। अगर आज बहुराष्ट्रीय कंपनीयों में नौकरियों की बहार है तो आपकी नौकरी कब चली जायगी, उसकी भी सुरक्षा नहीं है। लाखों के पैकेज कमाने वाले हमारे युवा, कमाने के साथ साथ बचत का भी फार्मूला अपनाएं तो उनके सुखद भविष्य के लिए बहुत अच्छा कदम होगा। यहां बचत करना मतलब कंजूसी नहीं हैं।

व्यर्थ या अनावश्यक खर्च को रोकना, अपने बच्चों को पैसों का महत्व समझाना तथा कमाए धन को अच्छे से निवेश करना ही बचत है। याद रखिए, प्राइवेट सेक्टर में सर्विस करने वालों को यह बचत ही आगे नियमित पेंशन के विकल्प के रूप में उपलब्ध रहेंगी और रिटायरमेंट के बाद भी आप कह सकेंगें - " सिर अठा के जियो "

श्रीमती वर्षा अजीत वरवंडकर
मनोवैज्ञानिक सलाहकार
एफ.एस.मेनेजमेंट ई.प्रा.लि.
मारुति विहार ,मोहबा बाजार
जी.ई.रोड़, रायपुर छ.ग.
Email – consult@fsindia.in